VISION IAS

www.visionias.in

VISION IAS
2 0 NOV 2021
RECEIVED

GENERAL STUDIES (TEST CODE : 1509)

Name of Candidate	Ravi		
Medium Eng./Hindi	Hindi	Registration Number	168117
Center	Mukhrajee Nagar	Date	20/11/2021

INDEX TABLE

Q. No.	Maximum Marks	Marks Obtained
1	10	
2	10	
3	10	
4	10	
5	10	
6	10	
7	10	
8	10	
9	10	
10	10	
11	15	
12	15	
13	15	
14	15	
15	15	
16	15	
17	15	
18	15	
19	15	
20	15	

Total Marks Obtained:

Remarks:

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न–पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. There are **TWENTY** questions printed in **ENGLISH & HINDI**
   इसमें बीस प्रश्न हैं अंग्रेजी और हिन्दी में छपे हैं।
3. **All questions are compulsory.**
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
4. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
5. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
   प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न–सह–उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
6. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
   प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
7. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. **Contextual Competence**
2. **Content Competence**
3. **Language Competence**
4. **Introduction Competence**
5. **Structure - Presentation Competence**
6. **Conclusion Competence**

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

VISION IAS™
Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

1. The architecture of Vijayanagara kingdom has a distinctive style comprising of unique features. Elaborate with examples. **(150 words) 10**

विजयनगर साम्राज्य की स्थापत्य कला अद्वितीय विशेषताओं से युक्त एक विशिष्ट शैली है। उदाहरणों के साथ सविस्तार वर्णन कीजिए।

हरिहर व बुक्का द्वारा स्थापित (1336-1565) विजयनगर साम्राज्य न केवल अपने क्षेत्रगत विस्तार के कारण प्रसिद्ध था, अपितु विद्या व्यसनी व कला प्रेमी शासकों द्वारा पोषित कलाओं की दृष्टि से भी। इसने भारतीय वास्तुकला में नये आयाम जोड़े।

वास्तुकला
- शहरी, दुर्ग व प्रकोष्ठ
- महल
- मंदिर

शहरी दुर्ग व प्रकोष्ठ ~~यात्री~~ यात्री नूनीज के वर्णनानुसार-

(i) शहर 7 प्रकार की चारदीवारी से घिरा था।

(ii) यहाँ ~~तक~~ तक कि धान के खेत भी बाहरी चारदीवारी के अंदर थे।

(iii) संपूर्ण राज्य के सभी महत्वपूर्ण उपादान दीवारों के मध्य थे। उदा० हम्पी

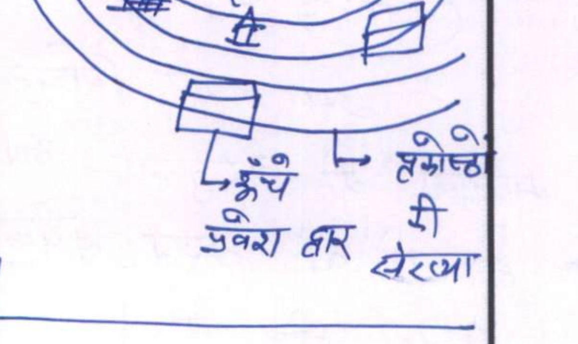

स्थापत्य तकनीक के स्तर पर अद्वितीयता :- यात्रियों के

वर्णानुसार दीवारों में किसी भी गारे या सीमेंटिंग एजेंट का प्रयोग नहीं किया गया था।

महल
- → विशाल भवन
- → खजानों से भरे हुए
- → राजा- रानी की मूर्तियाँ सजावट के तौर पर इस्तेमाल।
- → स्तंभों का भरपूर प्रयोग - उदा॰ लोटस महल।

मंदिर निर्माण में अद्वितीयता → मुख्यतः **द्रविड़ शैली**

(क) ऊँचे प्रवेश द्वार (गोपुरम) - दुश्मनों से बचाने हेतु।

(ख) अद्वितीय अप्राकृतिक चित्राकृतियों व मूर्तियों का प्रयोग - उदा॰ **लियोग्रीफ**

(ग) नये प्रकार के मंडल व श्राइन
उदा॰ अम्मान श्राइन व कल्याण मंडप
(शिव के मंदिर)

इस प्रकार विभिन्न स्तरों पर विजयनगर साम्राज्य की वास्तुकला अपनी प्रकृति में अद्वितीय ही नहीं थी वरन- पूर्ववर्ती शैली का अगला चरण भी थी।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

2. Although the tenure of Lord William Bentinck was short, it was marked by enduring reforms. Elaborate. **(150 words) 10**

यद्यपि लॉर्ड विलियम बेंटिंक का कार्यकाल छोटा था, तथापि इसे स्थायी सुधारों के लिए जाना जाना जाता है। सविस्तार वर्णन कीजिए।

लॉर्ड विलियम बैंटिक एक शांत, सज्जन व सुधारवादी मानसिकता के व्यक्ति थे जिन्होंने इंग्लैण्ड के सुधारवादी आंदोलन में भाग लिया था। अतः यही मानसिकता भारतीय कार्यकाल (1823-1835) में भी दृष्टिगोचर होती है।

(क) प्रशासनिक सुधार

(i) केन्द्रीकृत शासन व्यवस्था (चार्टर अधिनियम 1833 के तहत) - बंगाल का गवर्नर जनरल भारत का गवर्नर जनरल कहलाने लगा। ⇒ एकसमान प्रशासन को बढ़ावा।

(ii) न्यायिक सुधार :- प्रान्तीय न्यायालयों (सिविल) व सर्किट कोर्ट (अपराधी) को समाप्त कर व शक्तियां पहले कमीशनों व बाद में जिला कलेक्टरों को सौंपी क्योंकि -

(A) खर्चीली न्याय व्यवस्था थी।

(B) लंबित मुकदमों की अधिक संख्या।

(ख) रियासतों के प्रति नीति :- वेलेजली व हेस्टिंग्स के बजाय अहस्तक्षेप की नीति अपनायी।
- अकारण हस्तक्षेप व दखलंदाजी नहीं।

(ग) धार्मिक- सामाजिक सुधार
- सती प्रथा उन्मूलन - 1829
- 1833 के एक्ट के तहत दास प्रथा समाप्ती की बात।

(घ) समतावादी :- 1833 के एक्ट में प्रतियोगी परीक्षा व नौकरी का आधार योग्यता को माना गया।

(ङ) शैक्षिक सुधार :- भारतीय शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु मैकाले समिति नियुक्त।

इस प्रकार पूर्ववर्ती गवर्नरों के विपरीत बैंटिक ने प्रगतिशीलता व सुधारवादी मानसिकता का परिचय देते हुए आर्थिक- सामाजिक - प्रशासनिक स्तर पर सुधारों को उद्वलित किया।

3. While the Indian capitalists were not in favour of protracted mass civil disobedience, many of them also acknowledged the utility, even necessity, of civil disobedience in getting crucial concessions for their class and the nation. Explain. **(150 words) 10**

जहाँ भारतीय पूँजीपति दीर्घकालीन समय तक चलने वाले सामूहिक सविनय अवज्ञा के पक्ष में नहीं थे, वहीं उनमें से कई ने अपने वर्ग और राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण रियायतें प्राप्त करने में सविनय अवज्ञा की उपयोगिता, यहाँ तक कि आवश्यकता को भी स्वीकार किया। स्पष्ट कीजिए।

भारतीय पूंजीपति वर्ग इस मामले में अद्वितीय था कि उसने स्वतंत्रता आंदोलन की साम्यवादी व आमूल-परिवर्तनवादी प्रवृत्ति के बावजूद स्वतंत्रता आंदोलन को समर्थन दिया। हालांकि उनके समर्थन का तरीका कुछ अलग था।

समर्थन के तरीके

(i) अधिक लंबे आंदोलन से परहेज।

(ii) विरोध, बहिष्कार, हड़ताल के बजाय संवैधानिक तरीकों पर बल।

(iii) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का समर्थन।

(iv) 'संघर्ष - विराम - संघर्ष' पर बल।

यही समर्थन उन्होंने सविनय अवज्ञा में अपनाया। हालांकि कुछ आशंकाएँ निम्न थी।

(i) वे लंबे बंद, हड़ताल, बहिष्कार से

भयभीत थे। उदा० सुभाषचंद्र बोस की जमशेदपुर कारखाने में हड़ताल → इस्पात उत्पादन पर प्रभाव - पूंजीपति वर्ग प्रभावित।

(ii) मजदूर वर्ग में साम्यवादी सुगबुगाहट उन्हें विचलित करती थी।

(iii) आर्थिक गतिविधियाँ ठप होने का सीधा प्रभाव। उदाहरण पुरुषोत्तम दास टंडन जैसे पूंजीपतियों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के तरीकों में अनास्था प्रकट की।

किंतु उनका विरोध संकीर्ण नहीं था वरन् अपने आर्थिक हितों से था। ये आर्थिक हित भी वे राष्ट्रीय हितों से ऊपर नहीं रखते थे।

उदाहरण

(i) गांधी-इरविन वार्ता में सहयोग।

(ii) 'फिक्की' ने महात्मा गांधी व कांग्रेस के बिना गोलमेज सम्मेलन को अप्रमाणी बताया।

इस प्रकार पूंजीपति वर्ग यह चाहता था कि उनके हितों के लिये राष्ट्रीय स्वतंत्र सरकार आवश्यक है इसलिए उन्होंने सविनय अवज्ञा जैसे आंदोलनों को राष्ट्रवादी भावना से आर्थिक हितों की हिचकिचाहट के बावजूद समर्थन दिया।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

4. American Revolution was a constitutional crisis brought on by the irreconcilability of Britain's imperial interests and the colonists' experience in self-government. Explain. **(150 words) 10**

अमेरिकी क्रांति एक संवैधानिक संकट था जो ब्रिटेन के साम्राज्यिक हितों और स्व-शासन में उपनिवेशवासियों के अनुभव के परस्पर विरोध से उत्पन्न हुआ था। स्पष्ट कीजिए।

थॉमस जैफरसन व जॉज वाशिंगटन जैसे नेताओं के नेतृत्व में ~~अमिरीकी~~ अमेरिकी वासियों ने 1789 में संविधान का निर्माण एक लंबी लड़ाई के बाद प्राप्त किया। यह क्रान्ति विभिन्न हितों से प्रेरित थी।

हित

• इंग्लैण्ड के वणिकवादी हित	• अमेरिकी मुक्त व्यापार हित।
• इंग्लैण्ड के औपनिवेशिक हित।	• अमेरिका की स्वतंत्रता की चाह।
• इंग्लैण्ड के आर्थिक हित	• अमेरिकी 'प्रतिनिधित्व के बिना कर नहीं' का नारा
• टॉप-डाउन शासन गवर्नर के अधीन	• स्थानीय परिषद् किंतु गवर्नर का नियंत्रण

उपर्युक्त हितों के उदाहरण

(i) ग्रेनविले की नीतियाँ

सुगर एक्ट व स्टाम्प एक्ट - कर बढ़ाना

· औद्योगिक नीति - अमेरिकी उद्योगों को बंद करना।

· वाणिज्यिक नीति· अमेरिकी निर्यात सिर्फ इंग्लैण्ड को।

② लार्ड नॉर्थ की चाय नीति :- अमेरिका की चाय सिर्फ ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा। जबकि अमेरिकी मुक्त व्यापार चाहते थे।

③ कर वृद्धि :- प्रारंभ में आतंरिक कर तो बाद में कस्टम ड्यूटी वृद्धि

उपर्युक्त कारकों ने अमेरिकी लोगों में यह भावना भरी की जहाँ हमें प्रतिनिधित्व प्राप्त नहीं है उनको हम पर कर लगाने का भी अधिकार नहीं है। जिसका परिणाम गवर्नर शासन के विरुद्ध असंतोष व बोस्टन टी पार्टी से होते हुए एक संवैधानिक संकट के रूप में क्रान्ति के रूप में बाहर आया।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

5. Explaining the phenomenon of Western Disturbance, discuss its impact on the Indian weather system. (150 words) 10

पश्चिमी विक्षोभ की परिघटना को समझाते हुए, भारतीय मौसम प्रणाली पर इसके प्रभाव की विवेचना कीजिए।

पश्चिमी विक्षोभ उपोष्ण कटिबंधीय चक्रवात होते हैं जो पूर्वी भूमध्यसागर पर शीत ऋतु में पैदा होते हैं। इनका भारतीय जलवायु पर भी प्रभाव पड़ता है।

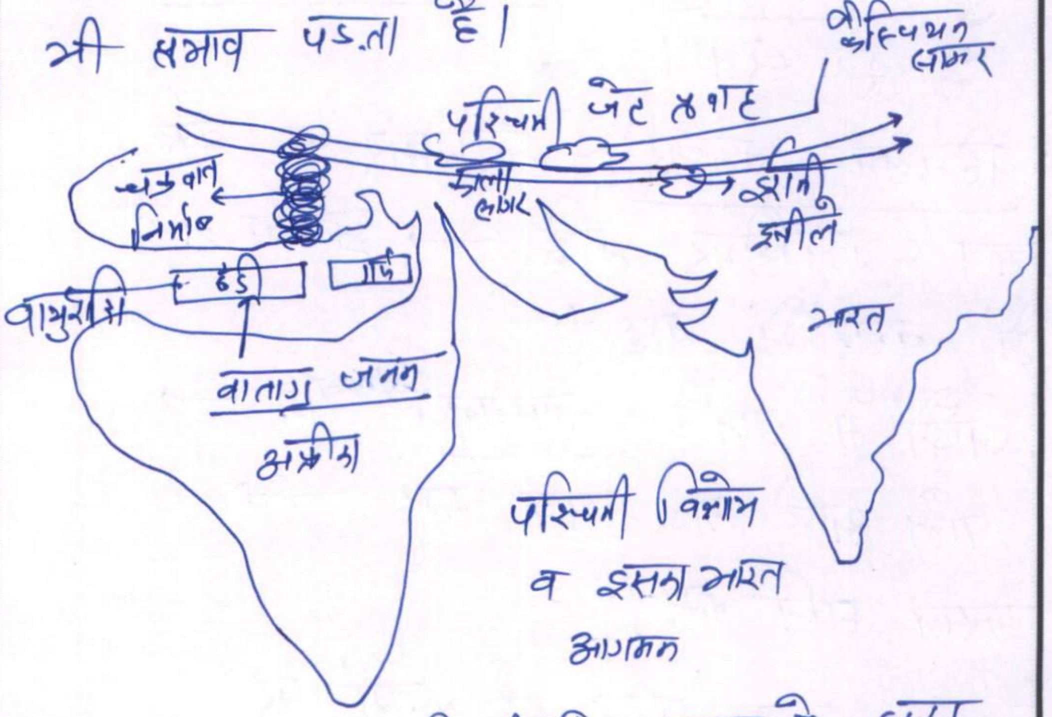

पश्चिमी विक्षोभ व इसका भारत आगमन

इस प्रकार पश्चिमी जेट प्रवाह के द्वारा ये भारत आते हैं व रास्ते में कैस्पियन सागर, काला सागर आदि से और अधिक आर्द्रता प्राप्त कर लेते हैं।

भारत पर प्रभाव

(i) शीतकालीन वर्षा :- जाड़ों की वर्षा में

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

प्रमुख योगदान
→ राजस्थान में 'मावठ' - चने की फसल को लाभ
→ अन्य क्षेत्र - गेहूँ, सरसों को लाभ।
→ दिल्ली प्रदूषण का कम होना।

(ii) शुष्क शीत ऋतु में वर्षा द्वारा जल संकट को दूर करना।

(iii) हिमालयी बर्फबारी - ग्लेशियर पर बर्फ जमाव - ग्लेशियर वृद्धि → ग्रीष्म ऋतु में बहाव में वृद्धि।

(iv) जाड़ों में रात्रि के तापमान में वृद्धि → पाले आदि का प्रभाव कम → फसल हानि कम।

इस प्रकार कई स्तरों पर आर्थिक, कृषिगत व जलीय स्तर पर ये विक्षोभ भारत को लाभान्वित कर खाद्य व जल सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

6. Arabian Sea, a cyclone shy water body, is converting into a cyclone hotbed. Analyse the reasons behind this trend. **(150 words) 10**

अरब सागर, जहाँ पहले कम चक्रवात आते थे, वहीं अब यह चक्रवात प्रवण जल निकाय के रूप में परिवर्तित हो रहा है। इस प्रवृत्ति के लिए उत्तरदायी कारणों का विश्लेषण कीजिए।

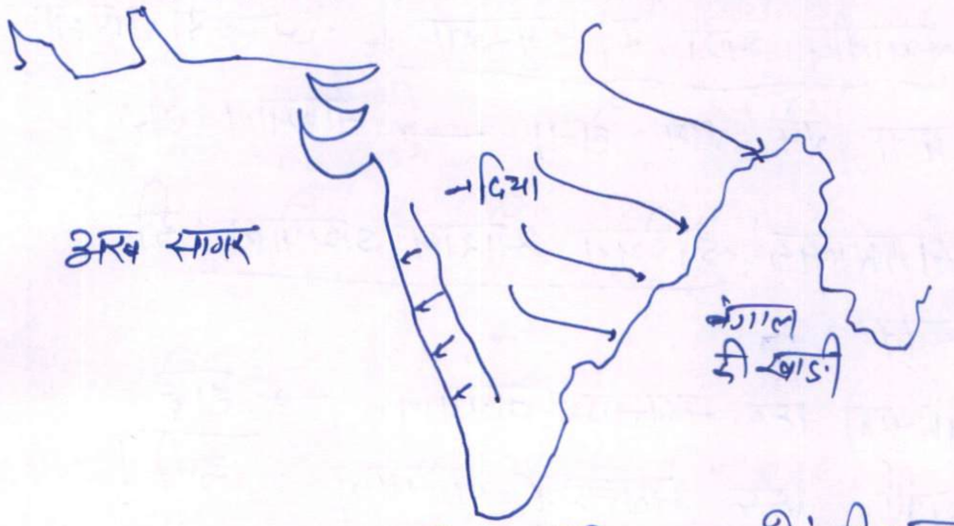

बंगाल की खाड़ी को पहले चक्रवातों की बहुलता का क्षेत्र माना जाता था (नदियों के जल का स्तरीकरण, उष्णकटिबंधीय कमज़ोर अवदाबों की उपस्थिति, पूर्वी जेट आदि के कारण) किंतु हालिया वर्षों में कई चक्रवात जैसे अम्फान, भास आदि का आना अरब सागर में इनकी बारंबारता में वृद्धि का संकेत देता है।

हालांकि पुख्ता प्रमाणों के तौर पर अभी सुस्थापित नहीं हो पाया है किंतु इसके निम्न कारणों का हवाला वैज्ञानिक देते हैं।

(i) जलवायु परिवर्तन :- इसके कारण अरब-

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

सागर' का तापमान (SST) में वृद्धि → जो कि चक्रवात निर्माण की प्रमुख दशा है

(ii) स्थलीय भाग की प्रमुखता :- जल की अपेक्षा तीव्रता से गर्म होना → तापमान वृद्धि।

(iii) सकारात्मक 'इंडियन ओशन डायपोल' की स्थिति :-
पश्चिमी हिंद महासागर तापमान → वृद्धि
पूर्वी हिंद महासागर तापमान – कमी।

(iv) अन्य कारक
→ एलनिनो (पूर्वी व मोदोकी)
→ मैडन जूलियन ओसिलेशन आदि।

उपर्युक्त कारकों का हवाला वैज्ञानिकों द्वारा दिया जाता है। हालांकि अभी भी बंगाल की खाड़ी के चक्रवात अधिक विध्वंसक होते है, फिर भी अरब सागर में इनकी वृद्धि चिंता का विषय है।

7. Despite the Peninsular India being a stable land mass and a region of slight seismicity, it has witnessed several earthquakes. Discuss with examples. **(150 words) 10**

एक स्थिर भूभाग और कमजोर भूकंपीयता का क्षेत्र होने के बावजूद, प्रायद्वीपीय भारत अनके भूकंपों का साक्षी रहा है। उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए।

भारतीय भौगोलिक क्षेत्र में सतपुड़ा पर्वत से नीचे का पठार से लेकर उत्तर-पूर्व में मेघालय पहाड़ियों व पश्चिम में थार के मरुस्थल तक भारतीय प्रायद्वीपीय भू-भाग का विस्तार है।

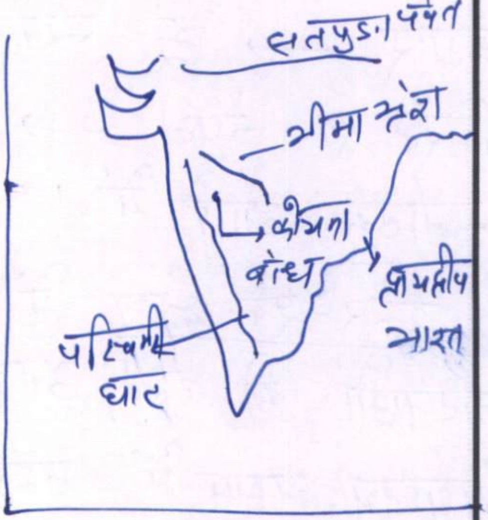

स्थिरता: यह एक क्रेटन क्षेत्र है जिसे अपेक्षाकृत स्थिर भू भाग माना जाता है।

भूकंपों का साक्षी

(i) भ्रंशों का सक्रिय होना: पुराने भ्रंशों यथा 'भीमा भ्रंश' (महाराष्ट्र) के सक्रिय होने के कारण यहाँ भूकंप आते रहते हैं।

(ii) जलाशय जनित भूकंप: बांधों में जल-दबाव के कारण भू-पर्पटी शैलों पर दबाव के कारण सरकना → ऊर्जा विमुक्त →

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

भूकंप। उदा० - कोयना बांध।

(iii) भू-स्खलन :- पश्चिमी घाट के तीव्र ढ़लान व कगार → भू-स्खलन → चट्टानों के गिरने से कंपन → भूकंप → केरल, कर्नाटक आदि में।

(iv) उत्तर-पूर्व क्षेत्र में प्लेट-विवर्तनिक घटनाओं की हल्की आवृत्ति का प्रभाव भी मेघालय, असम में महसूस किया जा सकता है।

(v) खनन-जनित भूकंप :- अधिक खनन के परिणामस्वरूप भी भूकंप आते हैं जो भविष्य में इस क्षेत्र में देखने को मिल सकते हैं।

इस प्रकार स्थिरता के बावजूद कुछ प्राकृतिक व कुछ मानवजनित कारक इस क्षेत्र की भूकंपावृत्ती में प्रभाव डाल रहे हैं।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

8. Despite all the long strides towards women's rights to property and inheritance in India, there still exist challenges that need to be addressed. Discuss. **(150 words) 10**

भारत में महिलाओं के संपत्ति अधिकारों और उत्तराधिकार की दिशा में सभी बड़ी प्रगति के बावजूद, अभी भी ऐसी चुनौतियाँ विद्यमान हैं जिनका समाधान किए जाने की आवश्यकता है। चर्चा कीजिए।

महिलाओं संबंधित चुनौतियाँ यदि बहुआयामी है तो उनका समाधान भी बहुआयामी ही हो सकता है, एक आयामी नहीं।

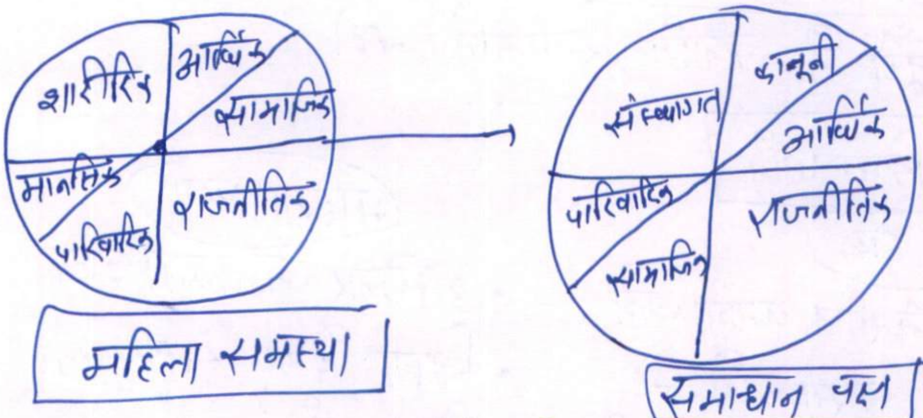

उपर्युक्त चार्ट समझाता है कि केवल कानूनी स्तर पर सुधार पर्याप्त नहीं है।

संपत्ति अधिकारों व उत्तराधिकार का प्रभाव

- महिलाओं में आत्म-मूल्य की भावना
- समता — बेटा-बेटी की संपत्ति बराबर
- आर्थिक उन्नयन
- संसाधनों पर नियंत्रण
- विकल्प बहुलता

किंतु विभिन्न अन्य धार्मिक व मनोवैज्ञानिक स्तर पर बाधाओं के कारण ये

सुधार प्रभावी नहीं होंगे क्योंकि—

(i) उत्तराधिकार में भूमि लेना — पारिवारिक नाराजगी का भय (पितृतंत्रीय सौदेबाजी)

(ii) संपत्ति देकर वापिस लेने (बेटे को) की इच्छा।

(iii) अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता का अभाव

(iv) राजनीतिक सक्रियता (सरकार की) की कमी।

(v) कानूनों को सामाजिक स्वीकृति नहीं

क्या किया जाये

पुरुष पक्ष
- संवेदनशील बनाया जाये
- संपत्ति साझा करने में गर्व की भावना विकसित की जाये।

महिला पक्ष
- अधिकार जागरूकता सृजन
- शिक्षा देकर सशक्तिकरण किया जाये।

सरकार पक्ष
- मजबूत कानून
- मजबूत प्रवर्तन
- मजबूत संस्था
- मजबूत भागीदारी

अतः आन्द्रे बेतिल के कथनानुसार कानून यह बताता है कि समाज को किस ओर जाना चाहिये किंतु समाज यह बताता है कि समाज किस ओर जायेगा। इस प्रकार बहुआयामी सामाजिक-राजनीतिक सुधार समय की मांग है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

9. It has been observed in India, while the population has stabilised in southern states, this remains a pipe dream in the case of northern states. Analyse the reasons behind this trend. **(150 words) 10**

भारत में यह देखा गया है कि जहाँ दक्षिणी राज्यों में जनसंख्या स्थिर हो गई है, वहीं उत्तरी राज्यों के मामले में यह अभी भी एक स्वप्न बना हुआ है। इस प्रवृत्ति के लिए उत्तरदायी कारणों का विश्लेषण कीजिए।

~~उप~~ उपर्युक्त मानचित्र भारत में प्रजनन दर आँकड़े दिखाता है NFHS-4 के आँकड़ों के अनुसार संपूर्ण भारत की प्रजनन दर 2.2 से 2.3 के मध्य है किंतु व्यापक उत्तर-दक्षिण विभाजन मौजूद है

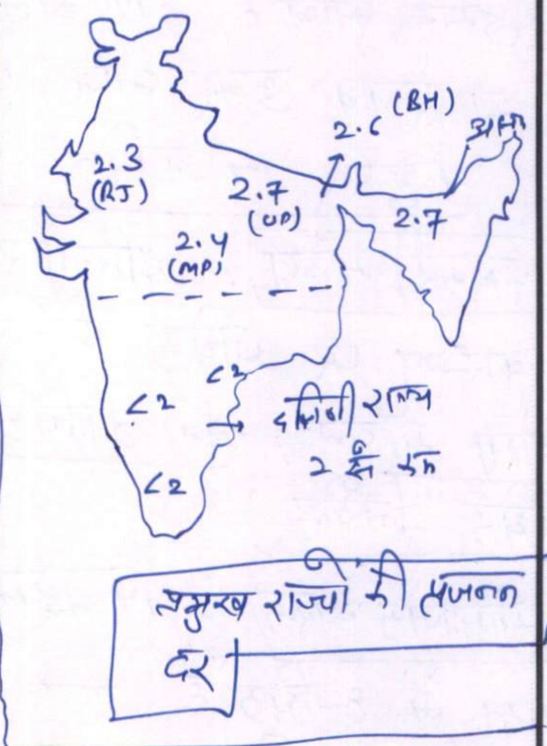

प्रमुख राज्यों की प्रजनन दर

उत्तरदायी कारक

① **आर्थिक कारक** :- दक्षिणी राज्यों का आर्थिक विकास का स्तर अधिक है अतः जनांकिकीय संक्रमण के सिद्धान्तानुरूप यहाँ जनसंख्या कम है उदा० तमिलनाडु, कर्नाटक (बैंगलोर) आदि।

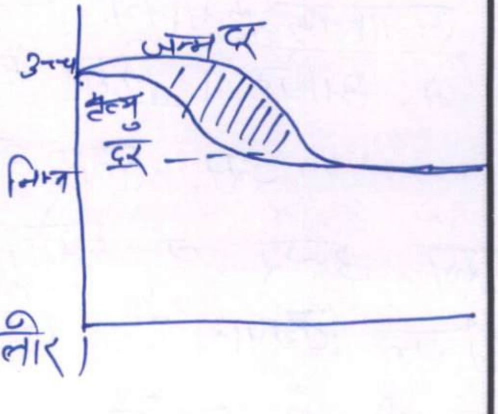

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

② **राजनीतिक कारक** :- दक्षिणी राज्यों द्वारा प्रारंभ से जनसंख्या नियंत्रण नीतियों का लागू किया जाना।

- इसके साथ ही आपातकालीन जबरदस्तियों का प्रभाव उत्तर भारत पर अधिक → तदनुसार → अधिक जनसंख्या

③ **सरकारी मॉडल** :- दक्षिणी राज्यों द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य पर अधिक निवेश उदा० केरल का बीमा मॉडल, नया आर्थिक कार्यक्रम (शिक्षा पर अधिक निवेश)

④ **सामाजिक कारक** :- पितृसत्तात्मक मूल्य उत्तर भारत में अधिक है → महिला स्वतंत्रता कम → अधिक बच्चे → प्रजनन दर अधिक

- केरल का मातृसत्तात्मक समाज।

- सामाजिक कुरीतियाँ - बाल विवाह भी उत्तर में अधिक। बिहार में सबसे अधिक

इस प्रकार उपर्युक्त कारणों के कारण उत्तर व दक्षिण में जनसंख्या वृद्धि अंतराल विद्यमान है जो कि समय के साथ कम भी हो रहा है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

10. Globalisation is affecting the attitudes and aspirations of youth in India in multifarious ways. Discuss. **(150 words) 10**

वैश्वीकरण भारत में युवाओं की अभिवृत्ति और आकांक्षाओं को विविध तरीकों से प्रभावित कर रहा है। चर्चा कीजिए।

तकनीक, व्यापार एवं मानवों की तीव्र अंतर्क्रिया के कारण वैश्विक अर्थव्यवस्था, समाजों आदि के अंतर्संबंधों का तीव्र, गहन व व्यापक होने की प्रक्रिया को वैश्वीकरण कहते हैं।

युवाओं पर प्रभाव

अभिवृत्ति पर प्रभाव

धार्मिक अभिवृत्ति

(i) धर्मनिरपेक्ष झुकाव।

(ii) रूढ़िवादी धार्मिक परंपरा का विरोध

(iii) धर्म पर वैज्ञानिक दृष्टि से प्रश्न उठाना

(iv) धर्म सुधार

आर्थिक अभिवृत्ति

(i) नयी व्यवस्था से लाभ लेने की प्रवृत्ति

(ii) नये रोजगार में संलग्न जैसे IT, BPO, MNCs

सांस्कृतिक अभिवृत्ति

- स्वयं को कॉस्मोपोलिटन मानना।
- खान-पान, पहनावे में संस्कृतिकरण का प्रभाव

सामाजिक अभिवृत्ति

- पुरुष-नारी समता मूल्य।
- जाति-प्रथा कमजोर
- पुराने मूल्यों से टकराव

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अकांक्षाओं पर प्रभाव

(i) अधिक धनार्जन की आकांक्षा।
(ii) तकनीकी प्रगति की अकांक्षा - नया मोबाइल, नया लैपटॉप लेने की इच्छा।
(iii) सोशल मीडिया पर प्रभाव की अकांक्षा।
(iv) नये स्तर पर प्रगति करने की उत्कंठा

हालांकि वैश्वीकरण के कारण इनकी अभिवृत्ति व अकांक्षाओं पर नकरात्मक प्रभाव भी नज़र आये हैं जैसे -

(i) पीढ़ी-संघर्ष का उद्भव
(ii) बेरोजगारी - (अधिक कुशल कार्यबल की मांग → सापेक्षिक वंचन)।
(iii) असमानता में वृद्धि → अजनाशा → अपराधों में वृद्धि।
(iv) पहचान की राजनीति व 'आदिम पहचानों' से जुड़ाव।

इस प्रकार यह वैश्वीकरण से सबसे अधिक प्रभावित वर्ग है जिस पर इसका प्रभाव मिश्रित रहा है क्योंकि रॉबर्ट जे. सैमुअलसन के शब्दों में 'वैश्वीकरण दो-धारी तलवार है जो अवसर व चुनौतियाँ दोनों पैदा करता है

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

11. Identifying its major forms, broadly trace the evolution of classical dance in India. **(250 words) 15**

शास्त्रीय नृत्य की प्रमुख शैलियों की पहचान करते हुए, व्यापक रूप से भारत में इसके विकास का पता लगाइए।

भारत में शास्त्रीय नृत्य का विकास अनेक स्थानों पर अनेक शैलियों में हुआ है जो विविधता की परिचायक है -

प्रमुख शैलियाँ

(i) भरतनाट्यम :- (तमिलनाडु) - (अग्नि तत्व)
- राग, लय, ताल नाटक से प्रसिद्ध
- अल्लारिपु, जातिस्वरूप, तरंगम आदि में विभाजित

~~विकास~~ (ii) ~~कुचीपुडी~~ कथकली (केरल) :- शृंगार व आधारों (~~b~~oops के साथ)
- मानव मन: स्थितियों का चित्रण।

(iii) मोहिनीअट्टम (केरल) :- वायु तत्व का निरूपण · लास्य तत्व की प्रधानता
· महिला द्वारा श्वेत परिधान में।

(iv) ओडिसी :- उत्तर के बैले नाम से प्रसिद्ध।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

- त्रिभंग, चौक जैसी मुद्राएँ

(v) ~~कथकली~~ कुचीपुडी (आन्ध्रप्रदेश) :- मुक्त आकाश में किया जा सकता है। आकाश तत्व का निरूपण।

(vi) कत्थक :- (उत्तर भारत)
- फारसी प्रभाव युक्त
- घुंघरू आदि का प्रयोग
- ध्रुपद आदि रागों पर आधारित/

(viii) मणिपुरी :- स्थानीय परंपराओं (थांग टा), लाई हैराबा रासलीला आदि से प्रभावित नृत्य
- झूमने पर अधिक बल।

विकास के विविध तत्व

① भरतमुनि का नाट्यशास्त्र
- भरतनाट्यम का विकास
- अन्य पर प्रभाव

② वात्स्यायन का कामसूत्र
- ~~नृत्य~~ नृत्य को प्रमुख कला के रूप में वर्णित।

③ मंदिर संस्कृति का प्रभाव :- दक्षिण भारतीय नृत्य भरतनाट्यम (दासीअत्तम - देवदासी प्रथा) से प्रभावित)

④ शासकों की भूमिका
कथकली व मोहिनीअट्टम - त्रावणकोर शासकों का प्रमुख योगदान |

⑤ भक्ति आंदोलन का प्रभाव :- कुसलवा व भागवतालु जैसी भागवत मंडलियों का ओडिसी व कत्थक पर प्रभाव पड़ा है

⑥ प्राचीन नाट्य मंचों का प्रभाव :- यक्षगान, कुडियाट्टम, मुडियेट्टु का प्रभाव इन नृत्यों (दक्षिण भारतीयों पर) पड़ा है

⑦ अरबी फारसी - कत्थक पर प्रभाव
गायकी- ध्रुपद व अमीर खुसरो - कत्थक
स्थानीय परंपरा- मणिपुरी |

इस प्रकार भारतीय नृत्य परंपरा अपने विकास व विविधता की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध व व्यापक है

VISION IAS™

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

12. The acceptance of partition by the Indian National Congress was only the last stage of the process of gradual concessions given to the Muslim League. Critically discuss. **(250 words) 15**

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा विभाजन की स्वीकृति वस्तुतः मुस्लिम लीग को दी गई क्रमिक रियायतों की प्रक्रिया का केवल अंतिम चरण था। समालोचनात्मतक चर्चा कीजिए।

भारत का विभाजन भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के चरण में हिंदु-मुस्लिम में दरार की घटनाओं, अविश्वास, सांप्रदायिकता, तुष्टिकरण की राजनीतियों, विभाजनमूलक नीतियों, विचारधारात्मक भिन्नताओं से सम्भावित अंतिम परिणति था।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की भूमिका :- कुछ आलोचक इसे कांग्रेस की मुस्लिम लीग को दी गई रियायतों का परिणाम मानते हैं, जिसके उदाहरण निम्न हैं।

(i) मुस्लिम लीग के गठन से ही कांग्रेस द्वारा इसकी विचारधारा का विरोध न किया जाना।

(ii) लखनऊ-समझौता (1916) में पृथक चुनाव मंडलों की प्रणाली की स्वीकृति (मदन मोहन मालवीय के विरोध उपरांत भी)

(iii) 'असहयोग आंदोलन' में खिलाफत का प्रश्न लाने के कारण धर्म का राजनीति में

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

समावेशन। यहाँ तक कि महात्मा गांधी ने कहा था
"खिलाफत का प्रश्न पंजाब अत्याचारों से अधिक महत्वपूर्ण है।"

(iv) नेहरू रिपोर्ट में जिन्ना की मांगे मानना- किंतु उनका असमान्य रूप।

(v) जहाँ मुस्लिम लीग पृथकतावादी आंदोलन चला रही थी वहीं कांग्रेस ने मजबूत विचारधारात्मक आंदोलन सांप्रदायिकता के खिलाफ नहीं चलाया जैसे आजादी के लिये चलाया।

अन्तत: अंतरिम सरकार का मुद्दा हो या शिमला समझौता - आलोचकों की नजर में कांग्रेस की रियायतवादी प्रवृत्ति के कारण अन्तत: विभाजन हुआ।

किंतु समग्रता में देखें तो यह विचार उपयुक्त नहीं है क्योंकि-

(i) कांग्रेस प्रणाली प्रारंभ से धर्मनिरपेक्ष रही है (धर्म का राजनीति में प्रवेश नहीं।

(ii) खिलाफत आंदोलन भी हिंदु- मुस्लिम एकता से प्रेरित था और यह इसमें सफल

भी रहा।

(iii) जिन्ना की चरम मांगों (14 सूत्री) की अस्वीकृति।

(iv) कांग्रेस ने स्वयं को सर्वधर्म वहुला बनाया व जिन्ना को मुस्लिम लीग को एकमात्र मुस्लिम हित पार्टी मानने से इंकार (शिमला समझौता)।

(v) अन्त में भी अंतरिम सरकार, संविधान सभा के स्तर पर कांग्रेसी नेताओं ने जिन्ना से बातचीत का रुख अपनाया किंतु असफल रहे।

विभाजन के अन्य कारण

- अंग्रेजी विभाजनकारी नीतियाँ
  - मार्ले-मिन्टो एक्ट 1909
- सांप्रदायिक तत्व
- मुस्लिम लीग की पृथक पाकिस्तान की मांग

अतः संक्षेप में कांग्रेस की रियायतवादी प्रवृत्ति नहीं बल्कि अंग्रेजी नीतियाँ, मुस्लिम लीग की भूमिका, अशिक्षा व प्रबल धर्मनिरपेक्ष विचारधारात्मक आंदोलन की अनुपस्थिति विभाजन के प्रमुख कारण थे।

13. Over the course of the freedom struggle, especially after the Indian Council's Act of 1892, nationalist leaders in India transformed the Imperial Legislative Council, from a powerless machine functioning as a tool of endorsement of government policies into a forum for ventilating popular grievances. Discuss. **(250 words) 15**

स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान, विशेष रूप से 1892 के भारतीय परिषद अधिनियम के पश्चात्, भारत में राष्ट्रवादी नेताओं ने साम्राज्यिक विधान परिषद को सरकारी नीतियों के समर्थन के एक साधन के रूप में कार्य करने वाली शक्तिहीन मशीन से सार्वजनिक शिकायतों को व्यक्त करने वाले एक मंच में परिवर्तित कर दिया। चर्चा कीजिए।

1885 में कांग्रेस के गठन से ही कांग्रेस ने राजनीतिक जनमत निर्माण के साथ राजनीतिक प्रतिनिधित्व की मांग उठाई जिसका कुछ लाभ 1892 के अधिनियम में सामने आया।

1892 के अधिनियम के प्रावधान:
- विधानपरिषदों में गैर-सरकारी सदस्य संख्या वृद्धि।
- अप्रत्यक्षतः ही सही मगर 'चुनाव' का प्रावधान
- बजट पर चर्चा का अधिकार, मत का नहीं

हालांकि सुधार अपर्याप्त व असंतोषजनक थे। साथ ही गवर्नर जनरल की कार्यकारी परिषद पर विधायिका का नियंत्रण न होना; गैर-सरकारी सदस्यों का अल्पमत; बजट पर अनियंत्रण जैसे प्रावधान इन

परिषदों को शक्तिहीन साबित करते थे। फिर भी कांग्रेसी नेतृत्व ने इनका लाभ इस प्रकार लिया —

① राजनीतिक जनमत-निर्माण

- भाषणों के माध्यम से — प्रतिनिधित्व की बात की।
- ↳ परिषद् में प्रस्ताव, पत्र, प्रार्थना-पत्र रखना ⟶ सारी कार्यवाही प्रेस में प्रकाशित होना ⟶ जनता द्वारा अध्ययन ⟶ जागरूकता सृजन।
- लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रसार
  उदा० गोखले के भाषण।

② आर्थिक आलोचना :- व्यय पर 'वेल्बी आयोग' का गठन

- गोपाल कृष्ण गोखले द्वारा परिषद् में तर्कों द्वारा व्यय कम करने की बात की गई।
- प्रमुख पत्रों दादा भाई नौरोजी, रमेश दत्त के व्याख्यान द्वारा साम्राज्य की अर्थशास्त्रीय आलोचना किया जाना।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

③ लोकप्रिय मांगों का निरूपण :- विभिन्न प्रतिवेदनों पर चर्चा, पत्र - व्यवहार द्वारा —
- अफसरशाही में भारतीय प्रतिनिधित्व बढ़ाना।
- नमक - कर कम करना।
- भारतीय प्रतिनिधित्व वृद्धि
- 'होमरूल' की मांग।

④ स्वशासन की भावना व अनुभव :- अन्तत: इनमें निर्वाचन होने से भारतीयों में स्वशासन की भावना व अनुभव आया जो आगामी आंदोलन में काम आया।

हालांकि इनका प्रयोग व लाभ सीमित था क्योंकि बहुमतहीन होने व कार्यकारी पर निर्णायक नियंत्रण न होने से राष्ट्रीय आंदोलन की तीव्र गति से परिषदें नहीं दे सकी व उग्र राष्ट्रवादी चरण का विकास हुआ। फिर भी उपयोगितावादी दृष्टि से इनका अच्छा उपयोग आरंभिक राष्ट्रवादियों ने किया।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

14. Despite its advocacy for peaceful resolution of disputes, highlight the factors that prompted India to use force to remove Portuguese colonial rule from its territories after independence. **(250 words) 15**

विवादों के शांतिपूर्ण समाधान के पक्षसमर्थन के बावजूद, उन कारकों पर प्रकाश डालिए जिन्होंने भारत को स्वतंत्रता के पश्चात् अपने राज्य-क्षेत्रों से पुर्तगाली औपनिवेशिक शासन को बाहर निकालने के लिए बल प्रयोग करने हेतु प्रेरित किया।

भारतीय स्वतंत्रता के उपरांत सरदार पटेल, माउंटबेटन व अन्य भारतीय नेताओं की सूझबूझ, कूटनीति व शांतिपूर्ण समाधान की नीति ने भारतीय रियासतों के एकीकरण में मदद की।

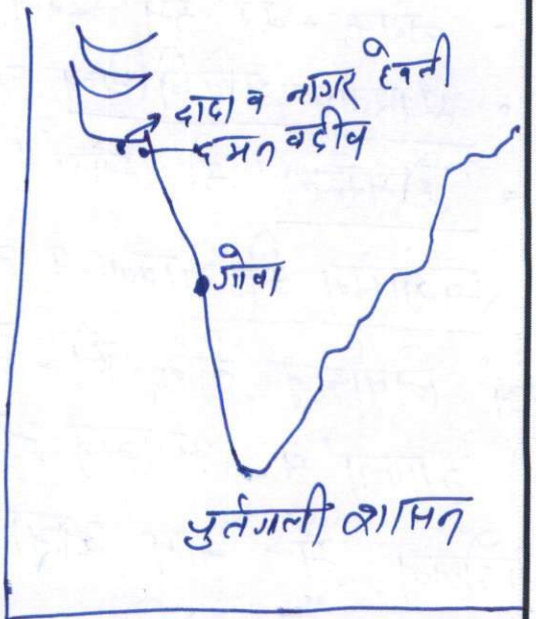

पुर्तगाली शासन :- आरंभ से ही पुर्तगालियों का शासन गोवा पर था। इसके अलावा

- दमनदीव = गुजरात के पास द्वीप
- दादा व नागर हवेली = मुख्य भूमि पर स्थित (गुजरात के निकट)

बल प्रयोग के कारक

(i) पुर्तगालियों के शासनान्तरण की

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अनिच्छा - पुर्तगाली अपना अधिकार इन क्षेत्रों पर छोड़ना नहीं चाहते थे।

(ii) जनता का विरोध :- औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध गोवा आदि की जनता में प्रबल विरोध चल रहे थे।

(iii) विरोधों का दमन करने की नीति :- इसके कारण भारतीय नेतृत्व व्याकुल हो उठा क्योंकि वे अपनी ही जनता पर विदेशी शासक द्वारा दमन सहन नहीं कर सकते थे।

(iv) आंतरिक राज्यों द्वारा समर्थन :- महाराष्ट्र जैसे राज्यों व समलदास गांधी जैसे नेताओं का समर्थन इन अधिग्रहीत भूमि के निवासियों पर था।

(v) कूटनीतिक प्रयासों की विफलता :- भारतीय सरकार द्वारा यूरोपीय पुर्तगाली सरकार से बातचीत भी की गई किंतु उनकी सहमति टालमटोल की प्रवृत्ति ने भारतीय नेताओं

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

को मजबूर किया।

(vi) शांतिपूर्ण नीतियों व साधनों पर पुर्तगालियों का ध्यान न देना

जनमत संग्रह आदि पर ध्यान नहीं देने पर बल-प्रयोग अवश्यंभावी ही था।

इस प्रकार आरंभ में पुरातन साधनों के बावजूद अन्ततः भारतीय सेना द्वारा प्रवेश कर 1961-62 में इन क्षेत्रों का भारतीय क्षेत्र में विलय कर दिया गया।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

15. The roots of the present Israel-Palestine conflict may be traced back to ancient history, however it is the 20th century which has shaped it in its modern form. Explain. **(250 words) 15**

वर्तमान इज़राइल-फिलिस्तीन संघर्ष की जड़ों को पीछे जाकर प्राचीन इतिहास में खोजा जा सकता है, हालांकि यह 20वीं शताब्दी थी जिसने इसे आधुनिक रूप में आकार दिया। स्पष्ट कीजिए।

मध्य एशियों में इजराइल - फिलीस्तीन संघर्ष ऐसा मसला है जिसने इस क्षेत्र की संपूर्ण शांति, स्थिरता को प्रभावित कर रखा है जिससे व्यापक आर्थिक, मानवीय हानियां हुई है।

प्राचीन ऐतिहासिक कारण

(i) विभिन्न धर्मों की जन्म स्थली :- जेरूसलम यहुदियों, ईसाईयों व मुस्लिमों सभी के लिये समान रूप से पवित्र है।
- ईसा मसीह का जन्म स्थान।
- यहुदी उद्भव का स्थान।
- मुस्लिम धर्म से जुड़ाव।

(ii) प्राचीनकाल से अलग धर्म राज्यों का नियंत्रण

सर्वप्रथम - यहुदी धर्म राज्य नियंत्रण
- ईसा मसीह के उपरांत → रोमन साम्राज्य के समय ईसाई धर्म को मानने

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

वाले लोगों का निवास स्थान।
- 14वीं-15वीं शताब्दी में तुर्कों का नियंत्रण (कुस्तुनतुनिया सल्तनत)।

उपर्युक्त कारणों के अलावा यहाँ के प्रमुख धार्मिक प्रतीक हैं जो सभी धर्मों के लिये पूजनीय व पहचान के प्रतीक हैं-

(i) जॉर्डन नदी।
(ii) यहाँ की मस्जिदें व चर्च आदि।

उपर्युक्त मसलों के कारण तनाव तो पहले से व्याप्त था जो 19वीं शताब्दी में निम्न कारणों से उभरा-

(i) तुर्की साम्राज्य का विघटन व विभिन्न समुदायों में स्वतंत्रता की भावना।
(ii) यूरोप में 1859 से 1897 तक यहूदी उत्पीड़न → यहूदी 'जायोनिज्म' का उद्भव → यहूदी राज्य में लौटने व बसाने का सपना।
(iii) 'यहूदी राष्ट्र फंड' की स्थापना → इस क्षेत्र में भूमि की व्यापक खरीद।
(iv) अरबों के राष्ट्रवाद का उदय → भूमि हेतु खींचतान हेतु।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

20 वीं शताब्दी

(i) प्रथम विश्वयुद्ध – तुर्की का विघटन → सेवर्स संधि

(1917)
→ ब्रिटेन की साइक्स पिकॉट समझौते व बाल्फोर घोषणा 1917 (यहूदियों को यहूदी राज्य बसाने की योजना) → यह अरब राज्य स्थापना के 'हुसैन- मैकमोहन पत्राचार' (इंग्लैंड फ्रांस (1916) के विपरीत थो।

(ii) यहूदी आप्रवासन में वृद्धि ← अरब टकराव
— नेबी - मूसा दंगे।

(iii) संयुक्त राष्ट्र संघ की योजना – बंटवारे की
→ अरबों द्वारा अस्वीकार
||
अरब इजराइल संघर्ष

उपर्युक्त समस्त कारणों से आज इस भीषण तनाव के क्षेत्र में इस क्षेत्र के लोग रह रहे हैं। इसमें प्राचीन कारण; राष्ट्रवादी भावनाएँ व औपनिवेशिक शक्तियों के हित व कुप्रबंधन प्रमुख कारण है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

16. Draw out a comparison between Savanna and Steppe types of climate in terms of economic and geographical aspects. (250 words) 15
आर्थिक और भौगोलिक पहलुओं के संदर्भ में सवाना और स्टेपी प्रकार की जलवायु के बीच तुलना कीजिए।

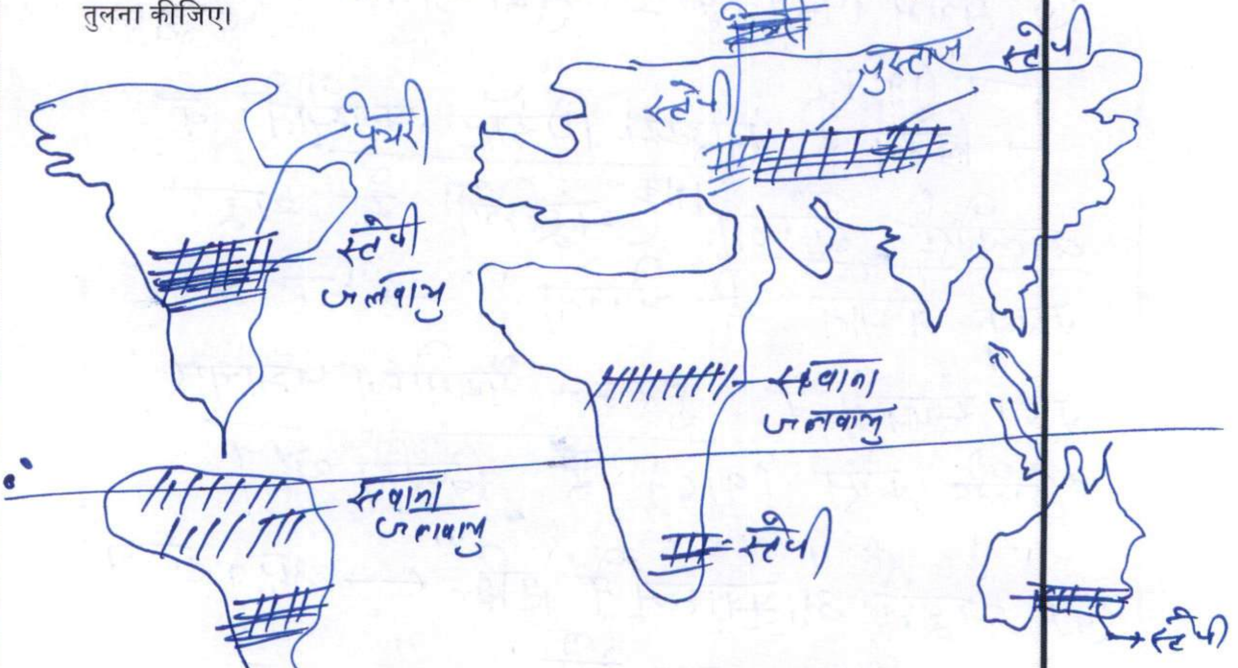

सवाना व स्टेपी जलवायु के क्षेत्र

दोनों जलवायु को घास परितंत्र के तहत रखा जाता है जहाँ घासों की प्रधानता पाई जाती है

तुलना

भौगोलिक

	सवाना	स्टेपी
अक्षांश	उष्ण कटिबंधीय घास क्षेत्र - 8°-20° उत्तरी व दक्षिणी अक्षांस	उपोष्ण कटिबंधीय घास क्षेत्र - 20°-40° उत्तरी व दक्षिणी अक्षांस

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

	सवाना	स्टेपी
आर्द्रता	· वार्षिक वर्षा कम · केवल वर्षा ऋतु में · ग्रीष्म गर्म व शुष्क - 50 cm वर्षा वार्षिक	· वर्षा-वर्षा की मात्रा तुलनात्मक अधिक · अधिक आर्द्र वर्षा · 75-100 सेमी वर्षा
तापमान	अधिक तापमान · 30-35°C ताप	· अपेक्षाकृत कम · 15-25°C ताप
घास क्षेत्र	· शुष्क लंबी घास · मलबी आदि कांटेदार व गुच्छेदार लंबी घासें। · पशुचारण हेतु अनुकूल	· हल्की घासें · कई जगह पौष्टिक · 'हल्कालका' (द० अमेरिका) · पशुचारण का क्षेत्र
पेड़	· पेड़ों का पाया जाना · बाओबब वृक्ष (अफ्रीका) · घास में आग लगने का गुण · वृक्षों पर नियंत्रण	· पेड़ नहीं। · वास्तविक घास क्षेत्र

आर्थिक पहलू

मुख्य पक्ष	- बिग गेम या पार्कलैंड भूमि - शिकारियों की भूमि	· मुख्यतः गेहूँ, मक्का पशुपालन हेतु साफ कर लिये गये हैं।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

आर्थिक क्रियाएँ	• मुख्यतः शिकार • अंशतः पशुपालन चरवाही पशुचारण • कुछ निम्न स्तरीय कृषि गतिविधियाँ • संग्राहक जनजातियाँ • आदिम निर्वाह कृषि • भूमि की उर्वरता अधिक नहीं	• उ० अमेरिका प्रेयरी (गेहूँ, मक्का, पशु चमड़ा) • पुस्टाज (हंगरी) गेहूँ व गन्ना • स्टेपी (रशिया) गेहूँ बेल्ट • मशीनीकृत खेती बड़े फार्म • प्रति व्यक्ति उपज अधिक • प्रति एकड़ कम उदा० शिकागो, डयुलुथ मेसाबी क्षेत्र

अतः घास-स्थल होने के बावजूद दोनों में विभिन्नताएँ विद्यमान हैं जहाँ सवाना अधिक विकसित नहीं है वहीं दूसरी ओर स्टेपी कृषिगत रूप से विकसित व खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्रों का केन्द्र है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

17. Give an account of the deposits of different types of minerals found in the ocean relief across the world. **(250 words) 15**

विश्व भर में महासागर उच्चावच में पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के खनिजों के निक्षेपों का विवरण दीजिए।

महासागरीय उच्चावच महाद्वीपों से भी अधिक विविधतायुक्त है जिसका प्रमुख कारण विवर्तनिक गतिविधियाँ है। यही कारण है कि ये ~~संसाध~~ महासागर खनिज संसाधनों से भी समृद्ध हैं।

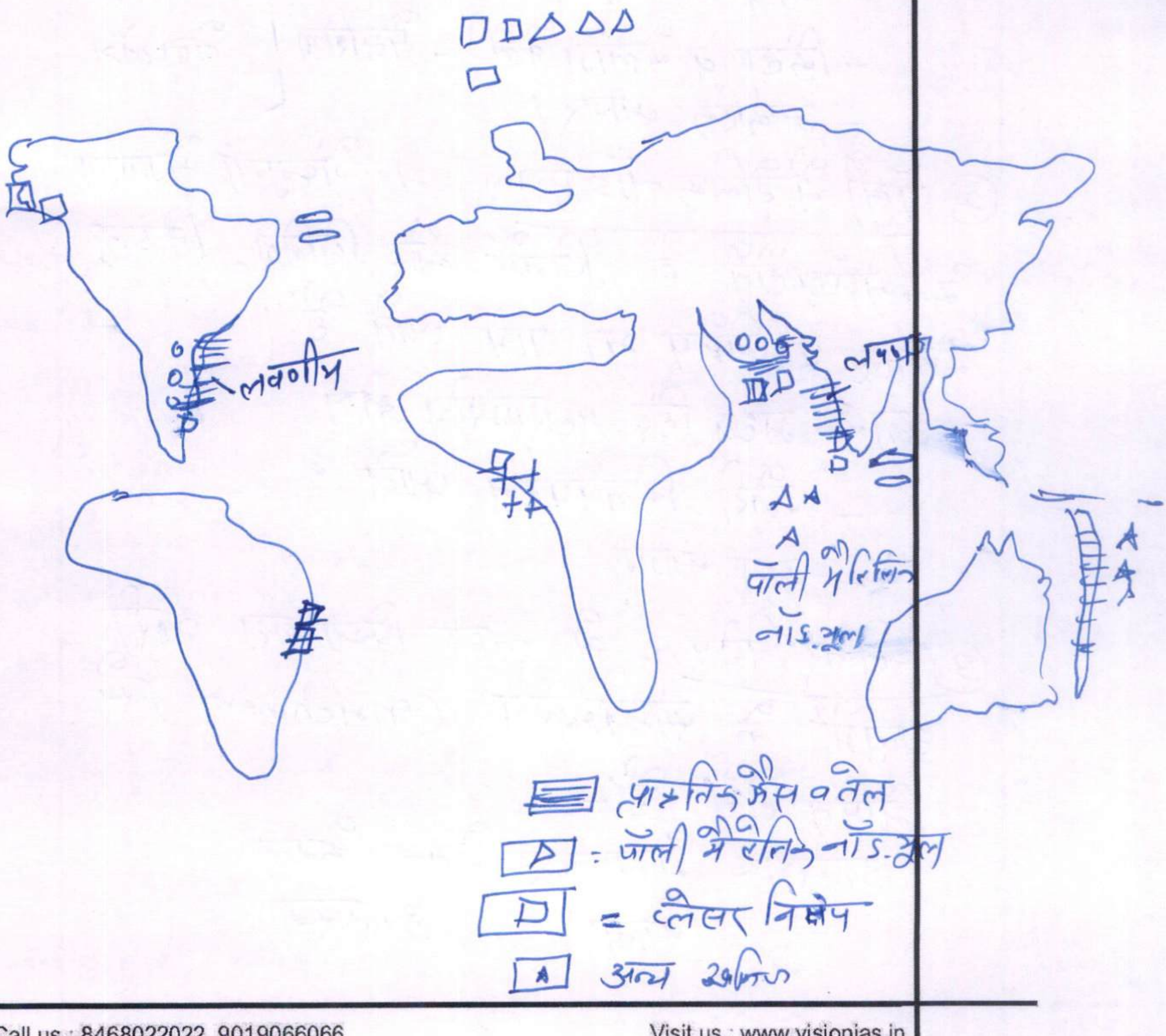

① ऊर्जा खनिज संसाधन

महासागरीय मग्नतट का निर्माण – महाद्वीपीय सीमांत के स्थलज व जलज निक्षेपों से → तलहट अवसादीकरण → तेल व गैस क्षेत्र।

उदा० – मुंबई हाई → भारत
– फारस की खाड़ी क्षेत्र
– कैंबे की खाड़ी
– किंटा व केलांग वैली – मलेशिया
– आर्कटिक सागर।

[प्राकृतिक गैस व तेल क्षेत्र]

② पॉली मैटेलिक नॉड्यूल :- ये गेंदनुमा मैंगनीज के निक्षेप होते हैं जिनमें लौह, सिलिका, निकल, कोबाल्ट के निक्षेप भी पाये जाते हैं।

उदा०- मध्य हिंद महासागरीय क्षेत्र
– क्लैरी क्लिपरटन जोन
– कारा सागर

③ प्लेसर निक्षेप :- ये लहर क्रिया द्वारा भारी धातुओं के समृद्धिकरण (enrichment) से निर्मित होते हैं –

उदाहरण- मोनाजाइट रेत- केरल
सोना – अलास्का

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

हीरा - दक्षिण अफ्रीका
जिरकोनियम - ब्राजील।

(4) लवणीय खनिज :- महासागरीय लवणों से नमक आदि लवणों का निर्माण भी किया जाता है।
उदा० - कच्छ की खाड़ी (भारत)

(5) पत्थर संबंधी खनिज :- ऑस्ट्रेलिया आदि की बैरियर रीफ आदि के दोहन से महत्वपूर्ण पत्थरों का दोहन कर भवन निर्माण जैसे साधनों में भी इनका प्रयोग किया जाता है।

इस प्रकार विभिन्न खनिजों के अलावा जैविक खनिजों के स्तर पर मछली आदि के स्रोत से भरपुर महासागर आज के आर्थिक विकास (SDG-14) व ब्लू इकोनोमी में महत्वपूर्ण कारक हैं।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

18. Discuss the problems and prospects of the cotton textile industry in India. **(250 words) 15**

भारत में सूती वस्त्र उद्योग की समस्याओं और संभावनाओं पर चर्चा कीजिए।

भारत में सूती वस्त्र उद्योग एक प्रमुख स्थान रखता है जो कृषि के बाद सबसे अधिक रोजगारप्रदाता (लगभग 40 मिलियन) एवं 'सकल घरेलू उत्पाद' में 4% का योगदान देता है।

सूती वस्त्र उद्योग की समस्याएँ

(i) **विखंडित क्षेत्र**

कताई के मामले में अत्यंत विकसित व संगठित किंतु बुनाई के मामले में अविकसित

सूती वस्त्र उद्योग का संकेन्द्रण

(ii) **तकनीकी चुनौतियाँ** :- अधिकांश उत्पादन (85%) हथकरघा से या मैनुअल

- मशीनीकरण की धीमी प्रवृत्ति।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

(iii) **कुशल श्रम का अभाव** :- जहाँ इंग्लैण्ड में 1 श्रमिक की उत्पादकता 100 मानें तो वहीं भारत में यही उत्पादकता 13 मानी जायेगी।
- कौशल विकास का अभाव।

(iv) **विद्युत व ऊर्जा समस्या** :- ह्यूमिडिफायर व आर्द्रता हेतु स्टीमर आदि के लिये विद्युत ज़रूरी
- नियमित सप्लाई नहीं।

(v) **उत्पादन में अनिश्चितता** :- जलवायु परिवर्तन, जल संकट - कपास उत्पादन कम।

(vi) **हड़तालें व श्रमिक संघ** :- 1980's के दशक की हड़तालों से आज तक उबर नहीं पाया है।

(vii) **नवाचार का अभाव** व **कृत्रिम रेशे** से प्रतिस्पर्द्धा

संभावनाएँ

① **कपास उत्पादन** में वृद्धि :- Bt कपास आदि नवाचारों से कच्चे माल की समस्या नहीं।

② **अनुकूल सरकारी नीतियाँ**
↳ कौशल विकास - PM कौशल विकास योजना

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

- हथकरघा क्षेत्र विकास योजना
- इंडियन हैंडलूम ब्रांड।
- 'कस्तूरी कॉटन ब्रांड'।
- परिधान पहचान पत्र।
- क्षेत्र को संघठित करने पर जोर – बुनाई के क्षेत्र में।

③ **निर्यात पर बल देना चाहिये**

- उत्पाद विविधीकरण पर जोर
  (सूती + कृत्रिम रेशा मिश्रण)
  (सूती + रेशम)
- इकॉनामी ऑफ स्केल पर महत्व
- सूक्ष्म व लघु उद्यमों को जोड़ना
- हब एंड स्पोक मॉडल पर बल।

महिला श्रम जागरूकता (महिला-सबल क्षेत्र)

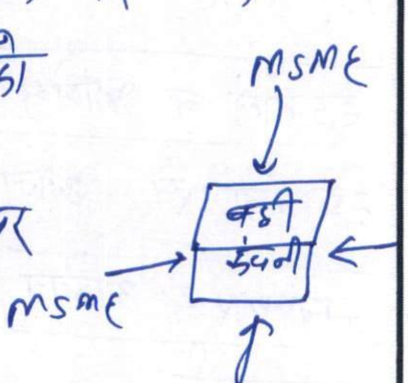

④ **तकनीक परिवर्तन**

- सुरक्षा वाली कपास
- नवाचार पर बल आदि

अतः उपर्युक्त संभावनाओं के कारण यह भारत के आर्थिक विकास व रोजगार सृजन में गेम चेंजर साबित हो सकता है

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

19. As Indian cities are undergoing rapid urbanization with burgeoning population, state policies and actions have proved to be inadequate to address the corresponding challenges. Analyse. **(250 words) 15**

जहाँ भारतीय शहर तेजी से बढ़ती जनसंख्या के साथ द्रुत शहरीकरण के दौर से गुजर रहे हैं, वहीं राज्य की नीतियां और कार्रवाईयां संबंधित चुनौतियों से निपटने के लिए अपर्याप्त सिद्ध हुई हैं। विश्लेषण कीजिए।

शहरीकरण से तात्पर्य लोगों का शहरों की ओर जाना, वहाँ बसना, वहाँ की अन्तक्रियाओं व गतिविधियों में भाग लेना व शहरी मूल्यों का अपनाना - आदि क्रियाओं से है।

भारत की शहरी जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 31% से बढ़कर 2030 तक 40% होने का अनुमान है। (वर्ल्ड पॉपुलेशन प्रॉस्पेक्टस)

तीव्र शहरीकरण: चुनौतियाँ।

(i) तीव्र जनसंख्या वृद्धि
(ii) नगरीय संकुलों का अविस्तार (दिल्ली, मुंबई)
(iii) मलिन बस्तियों में वृद्धि (17% - 2011 जनगणना)
(iv) यातायात व्यवस्था व ट्रैफिक जाम।
(v) वहनीय आवास की समस्या।
(vi) सामाजिक व आर्थिक अवसंरचना समस्या जल, बिजली, स्वच्छता

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अतः इन प्रमुख चुनौतियों से निपटने हेतु प्रमुख सरकारी नीतियाँ निम्न है -

① 74वां संविधान संशोधन अधिनियम।
(शहरी स्थानीय निकायों का गठन)

② राष्ट्रीय शहरी नीति।

③ प्रमुख योजनाएँ :-
- प्रधानमंत्री आवास योजना : शहरी।
- स्मार्ट सिटी मिशन।
- अमृत परियोजना।
- प्रसाद व हृदय जैसी योजनाएँ।

④ रोजगार व अर्थव्यवस्था
- शहरी आजीविका विकास योजना।
- प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना।

⑤ यातायात
↳ मैट्रो ट्रेन पॉलिसी (हालिया)
↳ BRTS, ट्राम जैसी नीति।

उपर्युक्त नीतियों के बावजूद चुनौतियों के स्तर पर शहरी परिदृश्य में अधिक सुधार नहीं हुआ है जिसकी खामियाँ व कारण निम्न हैं -

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

कारण

① अधिक आवास नहीं - आवास मूल्य पर विनियमन नहीं।

② भीड़-भाड़ व ट्रैफिक - उचित यातायात नियम नहीं

③ सामाजिक अवसंरचना की क्षीणता :- ULB में 3 F's (फंड, फंक्शन फंक्शनरीज) की समस्या
- राज्य सरकार द्वारा शक्ति हस्तान्तरण नहीं।

④ मलिन बस्तियाँ — राजनीतिक कारक (वोटबैंक)
- कल्याणकारी व मानववादी उपागम का अभाव
- बॉटम अप एप्रोच का अभाव

अतः उपर्युक्त कारणों से जिन भारतीय शहरों को सामाजिक परिवर्तन के अग्रदूत बनने की अपेक्षा थी वे उन्हीं कमजोरियों व बाधाओं का शिकार है जो पहले गांवों में थी।

सुधार
- ULB सुधार
- समन्वयात्मक एप्रोच
- बॉटम अप एप्रोच
- आवास मूल्य व किराया आवास सुधार
- अधिवास सुधार - कर संग्रह आदि।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

20. Nation doesn't negate the concept of region. Discuss the idea in the Indian context. **(250 words) 15**

राष्ट्र क्षेत्र की अवधारणा को नहीं नकारता है। भारतीय संदर्भ में इस विचार पर चर्चा कीजिए।

राष्ट्र से अभिप्राय है एक सीमा (Territory), लोग, संप्रभुता की उपस्थिति व इसके साथ-साथ जब लोग अपनी पहचान किसी भूमि के टुकड़े से करें तो इसे राष्ट्रवाद कहा जाता है। उदा० जर्मन लोग जर्मनी राष्ट्र से अपनी पहचान तय करते हैं।

जबकि क्षेत्र का तात्पर्य राष्ट्र के भीतर किसी क्षेत्र से अपनी पहचान अर्जित करना।

राष्ट्र व क्षेत्र के मध्य संबंध

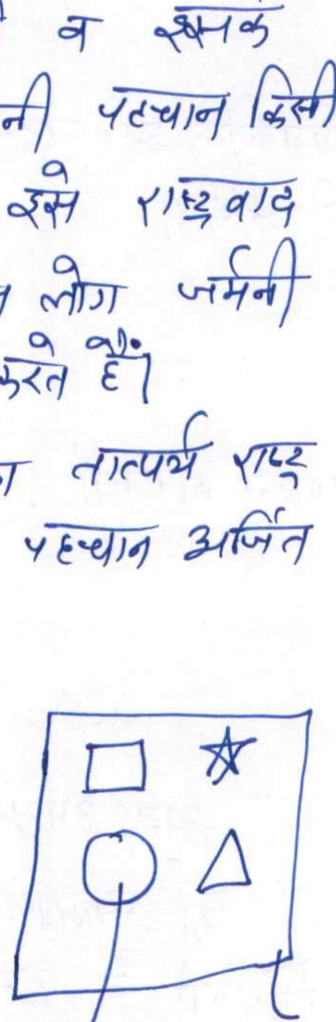

(i) राष्ट्रवादी पहचान का अर्थ क्षेत्रवादी पहचानों का लोप नहीं है वरन उन पहचानों के ऊपर राष्ट्र की पहचान को तरजीह देने से है।

(ii) क्षेत्र की अवधारणा का राष्ट्र निर्माण में योगदान :- आधुनिक राष्ट्र-राज्यों व संघीय

देशों जहाँ किसी देश का निर्माण विभिन्न राज्यों से होता है वहाँ ये पहचानें राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं-

कैसे -

(i) क्षेत्रीय समस्याओं को उजागर कर।
उदा. तेलंगाना में भूमि की समस्या

(ii) लोकतंत्र में विभिन्न विविधतायुक्त विचारों द्वारा हर तबके की आवाज उठाकर, जिससे 'आर्थिक-न्यायमूलक लोकतांत्रिक राष्ट्र' का निर्माण होता है

(iii) अपने क्षेत्र के नागरिकों का विकास कर ~~विकेन्द्रि~~ विकेन्द्रीकृत विकास को दिशा देकर
उदा. झारखण्ड का विकास बिहार से अलग कर।

(iv) 'सहकारी व प्रतिस्पर्धात्मक संघवाद' के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में विकास के इंजन द्वारा राष्ट्र निर्माण को मजबूत बनाकर

(v) वैश्वीकरण के युग में जहाँ विविधताओं

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

का लोप होकर 'समागीकरण की प्रवृत्ति' बढ़ रही है। इसी में यही क्षेत्रीय पहचाने 'विविधता का रक्षण' करने में मददगार साबित हो सकती है।

इसी कारण अमेरिकी संविधान में जहाँ राज्यों को पर्याप्त स्वायत्तता दी गई है तो वहीं भारतीय संविधान में विविधता का सम्मान कर स्वतंत्रता से राज्य पुनर्गठन चलता रहा है।

क्षेत्रवाद यदि अतिवाद के स्तर पर हो, तभी यह राष्ट्रवाद को चुनौती देता है अन्यथा राष्ट्र व क्षेत्र की अवधारणा एक दूसरे की विरोधी न होकर हाथ मिलाकर चलती है व एकता से राष्ट्रविकास में मदद करती है।